फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (क़िस्त : 30)

Dil Jeetne Ka Nuskha (Hindi)

दिल जीतने का नुस्ख़ा

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

येह रिसाला शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई

के मदनी मुज़ाकरे नम्बर 21 और 22 के मवाद समेत अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे

फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा ने नई तरतीब और कसीर नए मवाद के साथ तय्यार किया है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَالله عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(المُستطرَف ج١ص٤٠دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **''दिल जीतने का नुस्ख़ा''**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है । मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है ।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. **98987 32611** • E-mail : **hindibook@dawateislamihind.net**

पहले इसे पढ़ लीजिये !

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इ़ल्मो ह़िक्मत से मा'मूर मदनी मुज़ाकरात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए़ थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में मदनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले मदनी मुज़ाकरात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त मसलन अ़क़ाइदो आ'माल, फ़ज़ाइलो मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़मर्रा मुआ़मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इ़ल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ मदनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा''** इन मदनी मुज़ाकरात को काफ़ी तरामीम व इज़ाफ़ों के साथ **''फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ालआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद ह़ुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इनायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी गै़र इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

11 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1439 सि.हि./1 नवम्बर 2017 ई.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दिल जीतने का नुस्ख़ा

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल जवाब)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (42 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : मेरा जो उम्मती इख़्लास के साथ मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा, उस के दस दरजात बुलन्द फ़रमाएगा, उस के लिये दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा ।(1)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिल जीतने का नुस्ख़ा

सुवाल : किसी का दिल जीतने का नुस्ख़ा क्या है ?

जवाब : किसी का दिल जीतने के लिये इख़्लास, अच्छे अख़्लाक़ और आ'ला किरदार का मालिक होना ज़रूरी है । इन चीज़ों के ज़रीए

مدینہ

1 ......سُنن کبریٰ للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیلۃ، ثواب الصلاۃ...الخ، ۶/۲۱، حدیث: ۹۸۹۲ دار الکتب العلمیۃ بیروت

सामने वाले का दिल जीत कर उसे मुतअस्सिर किया जा सकता है। याद रखिये ! किसी को मुतअस्सिर करने का मक़्सद उस से अपनी ज़ात के लिये मनाफ़ेअ़ हासिल करना न हो बल्कि रिज़ाए इलाही के लिये उसे दीने इस्लाम से क़रीब करना मक़्सूद हो। दीने इस्लाम ने हमें ऐसे उसूल बताए हैं जिन्हें हम अपना कर दूसरों को मुतअस्सिर कर के मदनी माहोल से वाबस्ता कर के दीने इस्लाम के क़रीब कर सकते हैं। चन्द उसूल पेशे ख़िदमत हैं :

सलाम में पहल करना चाहिये

हर मुसल्मान को सलाम कीजिये ख़्वाह उसे जानते हों या न जानते हों जैसा कि हदीसे पाक में है : एक आदमी ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से दरयाफ़्त किया कि इस्लाम में क्या काम बेहतर है ? फ़रमाया : लोगों को खाना खिलाना और सलाम करना ख़्वाह तुम उसे जानते हो या न जानते हो।[1] नीज़ सलाम करने में पहल करना चाहिये कि येह हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नते मुबारका है। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दते मुबारका थी कि जिस से मुलाक़ात होती तो सलाम में पहल फ़रमाते''[2] अगर आप सवाब की निय्यत से इस सुन्नत पर अ़मल पैरा होते हुए हर छोटे बड़े मुसल्मान को सलाम करने में पहल करेंगे तो ज़िम्नन वोह आप से और आप की मीठी मीठी तह़रीक दा'वते इस्लामी से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ज़रूर मुतअस्सिर होगा। सलाम में पहल करने के साथ साथ दिलजोई की निय्यत से अगर मुसाफ़ह़ा करने के लिये हाथ बढ़ाने में भी पहल कर दें तो इस का भी सवाब मिलेगा।

1 ..... بخاری، کتاب الاستئذان، باب السلام للمعرفة و غیر المعرفة، ۴/۱۶۷، حدیث: ۶۲۳۶ دار الکتب العلمیة بیروت

2 ..... شعب الایمان، باب فی حب النبی ﷺ، فصل فی خلقه و خُلقه، ۲/۱۵۵، حدیث: ۱۴۳۰ دار الکتب العلمیة بیروت

www.dawateislami.net

अंगूठा दबाने से महब्बत पैदा होती है

हाथ मिलाते वक़्त हाथ को बिल्कुल ढीला न छोड़ें बल्कि अंगूठे को हलका सा दबाएं कि "अंगूठे में एक रग है जिसे दबाने से महब्बत पैदा होती है।"[1] अंगूठे को हलका सा दबाने और अपनी तरफ़ खींचने से वोह मुतवज्जेह होगा फिर चेहरे पर मुस्कुराहट लाते हुए नाम जानने की सूरत में अच्छे तरीक़े से उस का नाम लेते हुए उस से ख़ैरियत दरयाफ़्त कीजिये। अगर पहली मुलाक़ात है तो उस का नाम पूछिये। फिर तबीअ़त भी पूछिये। जब किसी का नाम ले कर उस से सलाम व गुफ़्तगू की जाए तो उसे ख़ुशी होती है और वोह अपनाइय्यत महसूस करता है और जल्द माइल हो जाता है।

उ़मूमन हमारे मुआशरे में गुफ़्तगू के दौरान एक मरतबा तबीअ़त पूछ लेने पर इक्तिफ़ा नहीं किया जाता बल्कि बार बार जुम्लों की तक्रार की जाती है। मसलन हाजी बिलाल आप ख़ैरियत से हैं, बिल्कुल ठीक हैं, घर में सब ख़ैरियत है, आप के बच्चे ठीक हैं। अब कुछ और याद न हो तो फिर पूछेंगे : और सुनाइये क्या हाल है ? सामने वाला भी ठीक ठीक कहता रहता है तो यूं काफ़ी वक़्त इसी ठीकठाक में निकल जाता है। बहर हाल दोंनों तरफ़ से एक ही जुम्ले की तक्रार करने के बजाए अच्छे अच्छे कलिमात इस्ति'माल करने चाहिएं।

दौराने मुलाक़ात नेकी की दा'वत

आजकल का माहोल ऐसा है कि उ़मूमन लोग मुलाक़ात के फ़ौरन बा'द हालात पर तब्सिरा, कारोबार पर गुफ़्तगू और तनख़्वाह वग़ैरा के बारे में

1 ..... ردالمحتار، کتاب الحظر والاباحة، باب الاستبراء وغیرہ، ۹/۶۲۹ دار المعرفة بیروت

www.dawateislami.net

पूछगछ शुरूअ़ कर देते हैं मगर आप हरगिज़ ऐसा न कीजिये बल्कि मौक़अ़ को ग़नीमत जानते हुए अपनी और सामने वाले की आख़िरत बेहतर बनाने के जज़्बे के तहूत दौराने मुलाक़ात मौक़अ़ की मुनासबत से नेकी की दा'वत पेश कीजिये। अगर वोह बे नमाज़ी है तो उसे नमाज़ की दा'वत दीजिये, अगर वोह नमाज़ी है लेकिन जमाअ़त का एहतिमाम नहीं करता तो नमाज़े बा जमाअ़त पहली सफ़ में अदा करने की तरग़ीब दिलाइये। याद रखिये ! अगर किसी के बारे में मा'लूम न हो कि येह बे नमाज़ी है या बिला इजाज़ते शरई जमाअ़त छोड़ने वाला है तो उस पर बद गुमानी न कीजिये और न तजस्सुस कीजिये और न ही उस से नमाज़ पढ़ने के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करें। नमाज़ बा जमाअ़त अदा करने और पहली सफ़ की फ़ज़ीलत पर कुछ न कुछ रिवायात ज़बानी हर्फ़ ब हर्फ़ याद कर लीजिये मगर अपनी तरफ़ से इस की कोई शर्ह वग़ैरा हरगिज़ बयान न कीजिये ताकि आप को तरग़ीब दिलाने में आसानी रहे और शरई ग़लतियां भी न हों। इसी त़रह़ मौक़अ़ की मुनासबत से कुछ न कुछ सुन्नतें बताइये, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत दीजिये, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की तरग़ीब दिला कर दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता करने की कोशिश कीजिये। मुलाक़ात के दौरान मौक़अ़ की मुनासबत से मसलन दौराने गुफ़्तगू कोई बात ज़ेह्न से निकल गई याद नहीं आ रही तो ''صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب'' बोल कर ख़ुद भी दुरूद शरीफ़ पढ़िये और सामने वाले को भी पढ़ने की तरग़ीब दीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बरकत से सवाब हाथ आने

www.dawateislami.net

के साथ साथ भूली हुई बात भी याद आ जाएगी जैसा कि ह़दीसे पाक में है : जब तुम किसी चीज़ को भूल जाओ तो मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह चीज़ तुम्हें याद आ जाएगी ।(1)

ख़ुशी की ख़बर पर मुबारक बाद

अगर सामने वाला ख़ुशी की कोई ख़बर सुनाए मसलन वोह कहे कि मेरे हां बच्चे की विलादत हुई तो आप उस को इस त़रह़ मुबारक बाद दीजिये : مَاشَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुबारक हो, **अल्लाह** तआ़ला आप की नस्लों को क़ियामत तक क़ाइम रखे, आप के मदनी मुन्ने को मदीने का शैदाई बनाए। फिर इस्तित़ाअ़त हो और शरई रुकावट भी न हो तो 112 रुपै या जितनी गुन्जाइश हो मदनी मुन्ने के लिये दे दीजिये । अगर वोह लेने से इन्कार करे तो कहें : भाई ! ले लीजिये, येह मदनी मुन्ने की आमद पर आप के लिये तोह़फ़ा है। आप का इस त़रह़ करना उस को उ़म्र भर याद रहेगा। इसी त़रह़ वोह शादी या मंगनी की ख़ुश ख़बरी सुनाता है तो इस पर भी ख़ूब ख़ूब मुबारक बाद दीजिये ।

ग़मी की ख़बर पर ता'ज़ियत

अगर वोह कोई अफ़्सोस नाक ख़बर सुनाए मसलन किसी अ़ज़ीज़ के इन्तिक़ाल की ख़बर दे तो उस से ता'ज़ियत कीजिये, वालिदैन या अपनी बीमारी वग़ैरा का ज़िक्र करे तो उसे बीमारी के फ़ज़ाइल बता कर हिम्मत और सब्र की तल्क़ीन करते हुए उस की और उस के वालिदैन की सिह़्ह़त

---

1 ...... القول البديع، الباب الخامس فی الصلاة علیه ﷺ ...الخ، ص ۴۲۷ مؤسسة الريان بيروت

www.dawateislami.net

याबी के लिये दुआ़ कीजिये। अगर उस के जिस्म पर कहीं पट्टी बंधी हुई नज़र आए और वोह ख़ुद न भी बताए आप रिज़ाए इलाही की निय्यत से उस की ग़म ख़्वारी करते हुए उस से पूछ लीजिये कि प्यारे इस्लामी भाई ! आप को येह क्या हुवा है ? सामने वाला येह सोचने पर मजबूर हो जाएगा कि मुझे पट्टी बंधे हुए इतने दिन गुज़र गए, मेरे घर वालों ने भी मुझ से नहीं पूछा लेकिन दा'वते इस्लामी वाले कितने हमदर्द और ग़म ख़्वार हैं कि देखते ही मुझ से पूछ लिया। फिर दोबारा जब मुलाक़ात हो या वक़्त निकाल कर उस के घर जा कर ग़म ख़्वारी कीजिये और पूछिये कि अब आप की त़बीअ़त कैसी है ? इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह ज़रूर आप से मुतअस्सिर होगा।

दूसरों की नफ़्सिय्यात को पेशे नज़र रखना

दौराने मुलाक़ात सामने वाले की नफ़्सिय्यात को पेशे नज़र रखना इन्तिहाई ज़रूरी है। अगर उस की नोकरी का टाइम हो या भूक की शिद्दत हो या इस्तिन्जे की ह़ाजत हो या वोह किसी और तक्लीफ़ वग़ैरा की वज्ह से इज़्तिराब (या'नी परेशानी) में हो और बार बार घड़ी देख रहा हो तो आप उस को "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، فِيْ اَمَانِ اللّٰه" कह कर अच्छे अन्दाज़ में रुख़्सत कीजिये। इस त़रह़ उस का दिल बहुत ख़ुश होगा और आयिन्दा आप से मुलाक़ात करने की त़लब रखेगा। अगर आप ने उस की नफ़्सिय्यात को पेशे नज़र न रखा और उस के इज़्तिराब के बा वुजूद उसे बिठाए रखा तो आयिन्दा वोह आप को देखते ही गली बदल लेगा।

''मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स'' करने में निय्यत

सुवाल : ''मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स'' करने में क्या निय्यत होनी चाहिये ?

जवाब : ''मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स'' बे शुमार नेक आ'माल सीखने और सिखाने का ज़रीआ़ है लिहाज़ा इस में ज़रूर अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिएं कि बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता। फिर जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा होगा। इस को इस मिसाल से समझिये कि आप पानी में चीनी मिला दें तो वोह शरबत बन जाएगा। अगर उस में कुछ और चीज़ें मसलन बादाम, पिस्ता, दूध और बर्फ़ वग़ैरा डाल दें तो उस की उ़म्दगी और ज़ाएक़े में मज़ीद बेहतरी आ जाएगी, जिस त़रह़ चीनी के शरबत में ज़ियादा चीज़ें डालने से उस की लज़्ज़त और उ़म्दगी में इज़ाफ़ा हो जाता है ऐसे ही नेक आ'माल में निय्यतों की ज़ियादती सवाब में इज़ाफ़े का बाइ़स होती है। बहर ह़ाल ''मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स'' में सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कि रिज़ा ह़ासिल करने की निय्यत होनी चाहिये। इस कोर्स में इ़ल्मे दीन सीखने का मौक़अ़ मिलता है लिहाज़ा इ़ल्मे दीन सीखने और दूसरों को सिखाने की निय्यत भी की जा सकती है। ''मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स'' दा'वते इस्लामी के मदनी कामों की रफ़्तार तेज़ तर

करने का बेहतरीन ज़रीआ़ है लिहाज़ा इस के ज़रीए मदनी कामों की धूमें मचाने, लोगों की आख़िरत बेहतर बनाने और सवाबे आख़िरत कमाने की निय्यतें भी की जा सकती हैं।[1]

"मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स" करने की अहम्मिय्यत

सुवाल : "मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स" करना क्यूं ज़रूरी है ?

जवाब : दुन्या का कोई भी काम हो उसे करने से पहले सीखना पड़ता है। अगर कोई बिग़ैर सीखे किसी काम को करने की कोशिश करेगा तो वोह कमा हक़्क़ुहू उसे नहीं कर सकेगा, मसलन जो शख़्स दरज़ी न हो उस को कपड़ा सिलाई करने के लिये दे दिया जाए कि उस का कुरता और पाजामा बना दो तो वोह कुरता और पाजामा तो क्या बनाएगा कपड़ा ही ज़ाएअ़ कर देगा क्यूं कि वोह उस काम को करना ही नहीं जानता। येही वज्ह है कि सिलाई का काम करने के लिये दरज़ी का सहारा लेना पड़ता है और इमारत बनाने के लिये मि'मार की ख़िदमात लेनी पड़ती हैं। जब दुन्यवी कामों को बेहतर त़रीक़े से सर अन्जाम देने के लिये सीखना पड़ता है तो दीन का काम ब दरजए औला सीख कर करना चाहिये ताकि सह़ीह़ मा'नों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करते हुए दीन का काम किया जा सके।

---

1 ..... अब "मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स" की जगह 12 दिन का "इस्लाहे आ'माल कोर्स" करवाया जाता है। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

''**मदनी इन्आ़मात** व मदनी क़ाफ़िला कोर्स'' में तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी की बक़ा है क्यूं कि दा'वते इस्लामी वालों का मदनी मक़्सद है ''मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ।'' इस मदनी मक़्सद में कमा ह़क़्क़ुहू काम्याबी पाने के लिये ''मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स'' इन्तिहाई ज़रूरी है, लिहाज़ा हर दा'वते इस्लामी वाले को चाहिये कि वोह ''मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स'' ज़रूर करे, चाहे वोह किसी मजलिस का निगरान हो या रुक्न या कोई भी आ़म ज़िम्मेदार इस्लामी भाई हो। जब आप येह कोर्स करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी मज़ीद तरक़्क़ी की मनाज़िल तै करेगी और इस के मदनी कामों को तक़्विय़त मिलेगी।

दर्से निज़ामी अहम है या मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना ?

सुवाल : दर्से निज़ामी करना अहम है या मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना ?

जवाब : यक़ीनन दर्से निज़ामी करने की बहुत अहम्मिय्यत है लेकिन इस में कोई शक नहीं कि दा'वते इस्लामी के जितने भी मदारिसुल मदीना और जामिआ़तुल मदीना हैं जिन में اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ हज़ारहा तुलबा इल्मे दीन ह़ासिल कर रहे हैं, इन में मदनी क़ाफ़िलों की बरकतें भी शामिल हैं। दा'वते इस्लामी के अवाइल में जब मदारिसुल मदीना व जामिआ़तुल मदीना नहीं थे उस वक़्त भी

मदनी क़ाफ़िले राहे ख़ुदा में सफ़र करते थे, मदनी क़ाफ़िलों की बरकत से दा'वते इस्लामी तरक़्क़ी के ज़ीने तै करती रही और येह मदारिसुल मदीना व जामिआ़तुल मदीना वुजूद में आए हैं। दर्से निज़ामी भी कीजिये, फ़र्ज़ उ़लूम के हुसूल के लिये ज़ाती मुत़ालआ़ भी कीजिये और अपने मदनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" को पेशे नज़र रखते हुए अपनी इस्लाह़ की कोशिश के साथ साथ सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र भी कीजिये।

ज़बान में तासीर कैसे पैदा हो ?

सुवाल : ज़बान में ऐसी तासीर कैसे पैदा हो कि हम जिस को भी मदनी क़ाफ़िले की दा'वत दें वोह राहे ख़ुदा का मुसाफ़िर बन जाए ?

जवाब : ज़बान में तासीर पैदा करने के लिये इख़्लास शर्त है। हमारा काम इख़्लास के साथ अह़सन अन्दाज़ में दूसरे इस्लामी भाइयों तक नेकी की दा'वत पहुंचाना है, उन्हें अ़मल की तौफ़ीक़ देने वाली **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात है। अगर आप किसी को नेकी की दा'वत पेश करें, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने का ज़ेह्न दें लेकिन वोह तय्यार न हो तो आप अपना दिल हरगिज़ छोटा न कीजिए, न ही सामने वाले के बारे में अपने दिल में येह बात लाइये कि बहुत ढीट है, टस से मस नहीं होता, इस का दिल पथ्थर से भी ज़ियादा

सख़्त है वग़ैरा वग़ैरा बल्कि उसे अपने इख़्लास की कमी तसव्वुर करते हुए रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये कोशिश जारी रखिये और दिलसोज़ी के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ भी करते रहिये कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी ज़बान में तासीर अ़ता फ़रमा और मेरी नेकी की दा'वत में पाई जाने वाली ख़ामियों को दूर फ़रमा कर लोगों को क़बूल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा। आप का येह कुढ़ना और दिलसोज़ी के साथ दुआएं करते रहना एक न एक दिन ज़रूर रंग लाएगा और आप अपनी आंखों से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के मदनी नताइज देख लेंगे।

हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن मुख़्लिस होने के साथ साथ इल्मो अ़मल और हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर भी हुवा करते थे, उन की ज़बानें ऐसी पुर तासीर होतीं कि जिस को भी नेकी की दा'वत देते उन की बात तासीर का तीर बन कर सामने वाले के दिल में पैवस्त हो जाती, येही वज्ह है कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की मसाइ़ये जमीला (उ़म्दा कोशिशों) से कुफ़्फ़ार कलिमा पढ़ कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो जाते।

जिस वक़्त सुन्नतों का मैं करने लगूं बयां
ऐसा असर हो पैदा जो दिल को हिला सके
मेरी ज़बान में वोह असर दे ख़ुदाए पाक
जो मुस्तफ़ा के इ़श्क़ में सब को रुला सके

(वसाइले बख़्शिश)

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र किस निय्यत से किया जाए ?

सुवाल : मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र सीखने सिखाने की निय्यत से करना चाहिये या इस निय्यत से कि दीगर मुसल्मानों तक नेकी की दा'वत पहुंचाना हमारी ज़िम्मेदारी है ?

जवाब : एक काम में कई निय्यतें की जा सकती हैं । आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बेशक जो इल्मे निय्यत जानता है एक एक फ़े'ल को अपने लिये कई कई नेकियां कर सकता है ।[1] इस लिये ह़स्बे ह़ाल जितनी निय्यतें हो सकें कर लीजिये कि जितनी निय्यतें ज़ियादा होंगी उतना ही सवाब भी ज़ियादा होगा । सब से पहले येह निय्यत कर लीजिये कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाबे आख़िरत कमाने के लिए मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर रहा हूं । मदनी क़ाफ़िले अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश का एक बेहतरीन ज़रीआ़ हैं लिहाज़ा अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करने की निय्यत से मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया जाए ।

(**शैख़े त़रीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :) जब भी मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करें तो अपनी तरबियत व इस्लाह़ का भी ज़ेह्न ले कर जाएं अगर फ़क़त़ दूसरों की तरबियत का ज़ेह्न ले कर जाएंगे तो हो सकता है कि आप को परेशानी का सामना करना पड़े जैसा कि एक मरतबा बैनल अक़्वामी

1 ..... फ़तावा रज़विय्या, 5/673, रज़ा फ़ाउन्डेशन, मर्कज़ुल औलिया लाहोर

www.dawateislami.net

सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के बा'द पंजाब के इस्लामी भाइयों का एक मदनी क़ाफ़िला अन्दरूने सिन्ध एक गाउं में गया। एक या दो दिनों के बा'द वोह मदनी क़ाफ़िला वापस आ गया। जब उन से मुलाक़ात हुई और वापस आने की वज्ह पूछी गई तो उन्हों ने कहा : हमें एक ऐसे गाउं में भेजा गया था जहां पर सारे सिन्धी इस्लामी भाई थे, न उन को हमारी बात समझ आती, और न ही हमें उन की बात समझ आती थी, इस वज्ह से हम तंग आ कर वापस आ गए हैं। मैं ने उन से इज़्हारे अफ़्सोस किया और कहा कि आप को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कि रिज़ा पाने, सवाब कमाने और अपनी क़ब्रो आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये करना था लिहाज़ा आप अपना पूरा वक़्त सीखने सिखाने में सर्फ़ करते। फिर उन इस्लामी भाइयों को एह़सास हुवा और वोह दोबारा मदनी क़ाफ़िले में राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर बन गए।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर आप अपनी तरबियत का मदनी ज़ेह्न ले कर मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करेंगे तो मक़ामी लोग किसी भी क़ौम से तअ़ल्लुक़ रखने वाले और कोई भी ज़बान बोलने वाले हुए तो आप को परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। हमारी येह ज़िम्मेदारी नहीं कि जहां हमारा मदनी क़ाफ़िला सफ़र करे वहां के लोगों को सिखा कर ही आना है, हमारा काम कोशिश करना है अलबत्ता ऐसा भी नहीं होना चाहिये कि आप मस्जिद से बाहर ही न निकलें कि येह दूसरी ज़बान बोलते हैं उन को हमारी और हमें उन की क्या समझ आएगी ? हमारे सह़ाबए किराम व बुज़ुर्गाने दीन رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने भी दुन्या की सारी ज़बानें नहीं सीखी थीं लेकिन इस्लाम का पैग़ाम ले कर दुन्या के मुख़्तलिफ़ ममालिक का सफ़र किया और दीने इस्लाम को दुन्या के

www.dawateislami.net

गोशे गोशे में पहुंचाया। येह उन्हीं नुफूसे क़ुदसिय्या की काविशों और क़ुरबानियों का नतीजा है कि आज اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुन्या भर में इस्लाम की रोश्नी फैली हुई है और गुलशने इस्लाम हरा भरा लह्लहाता हुवा नज़र आ रहा है।

लोग ज़बान न समझते हों तो मदनी काम कैसे करें ?

सुवाल : अगर मदनी क़ाफ़िला ऐसी जगह सफ़र करे जहां के मक़ामी लोग न हमारी ज़बान समझते हों और न हमें उन की ज़बान की सूझ बूझ हो तो वहां मदनी काम कैसे किया जाए ?

जवाब : अगर मदनी काम करने का जज़्बा हो तो राहें ख़ुद ब ख़ुद खुल जाती हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अस्बाब पैदा फ़रमा देता है। कोई हिक्मते अ़मली अपना कर उन को मानूस कर के अपने क़रीब कीजिये। फिर वहां ऐसे अफ़राद तलाश कीजिये जो कुछ न कुछ आप की ज़बान की समझ बूझ रखते हों, इस त़रह़ उन के ज़रीए आप को मदनी काम करने में काम्याबी हो जाएगी और मदनी काम का सिल्सिला शुरूअ़ हो जाएगा। आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये एक मदनी बहार पेशे ख़िदमत है चुनान्चे ''एक बार दा'वते इस्लामी का एक मदनी क़ाफ़िला चाइना पहुंचा। वहां के लोग मदनी क़ाफ़िले वालों की ज़बान नहीं समझते थे और न ही मदनी क़ाफ़िले वालों को उन की ज़बान समझ आती थी। मदनी क़ाफ़िले वालों ने बहुत सोचा

कि इन को कैसे तरकीब में लिया जाए, बिल आख़िर एक इस्लामी भाई जो ख़ुश इल्हान ना'त ख़्वां भी थे उन्हों ने क़सीदए बुर्दा शरीफ़ पढ़ना शुरूअ़ किया तो वहां के लोग मस्जिद में इकठ्ठे हो गए। क़सीदए बुर्दा शरीफ़ सुन कर बा'ज़ों के आंखों में आंसू आ गए। इल्मे दीन से दूरी का येह हाल था कि वोह लोग जूते पहन कर मस्जिद में आते थे। मिस्वाक शरीफ़ का कोई तसव्वुर ही न था। मदनी क़ाफ़िले वालों ने इशारों ही इशारों में उन को मस्जिद से बाहर जूते उतारने का त़रीक़ा समझाया और प्रेक्टीकल कर के भी दिखाया कि मस्जिद के इस हि़स्से में जूते नहीं पहनते, फिर उन को क़रीब ही जंगल में दरख़्त की टह्नियों को तोड़ कर मिस्वाक बनाना और इशारों से करना सिखाया कि यह सुन्नते पैग़म्बर है (वोह लोग सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सिर्फ़ पैग़म्बर कहते थे)। चन्द दिनों के बा'द वहां उर्दू और इंग्लिश बोलने और समझने वाले कुछ मुसल्मान भी मिल गए। फिर उन के ज़रीए उस अ़लाक़े वालों पर मज़ीद कोशिश की गई तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ कुफ़्फ़ार भी मुसल्मान हो कर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुए। आहिस्ता आहिस्ता मदनी कामों में तरक़्क़ी होती गई। फिर मदनी कामों को मज़ीद बढ़ाने के लिये वहां के एक मक़ामी इस्लामी भाई के घर हफ़्ता वार इज्तिमाअ़ भी शुरूअ़ कर दिया।'' मा'लूम हुवा कि अगर मदनी काम करने का जज़्बा हो तो हि़क्मते अ़मली के साथ दुन्या के हर ख़ित्ते में मदनी काम किया जा सकता है।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी

सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

(वसाइले बख़्शिश)

www.dawateislami.net

बिग़ैर किये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल का एक क़ाइ़दा

सुवाल : ऐसे मदनी इन्आ़मात जिन पर मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र की वज्ह से अ़मल नहीं हो सकता मसलन वालिदैन के हाथ चूमना, घर में दर्स देना वग़ैरा तो क्या दौराने मदनी क़ाफ़िला इन मदनी इन्आ़मात पर अ़मल माना जाएगा ?

जवाब : जी हां ! अगर घर में ऐसे मदनी इन्आ़मात पर अ़मल करने का मा'मूल हो तो मदनी क़ाफ़िले वग़ैरा के दौरान ऐसे मदनी इन्आ़मात पर अ़मल माना जाएगा जैसा कि मदनी इन्आ़मात के रिसाले के सफ़हा नम्बर 2 पर क़ाइ़दा नम्बर 4 में येह रिआ़यत मौजूद है : बा'ज़ मदनी इन्आ़मात ऐसे हैं जिन पर सह़ीह़ उ़ज़्र (या'नी ह़क़ीक़ी मजबूरी) की बिना पर अ़मल की कोई सूरत न हो या इस दौरान दूसरे मदनी काम में मश्ग़ूलिय्यत है मसलन ज़िम्मेदार वग़ैरा दीगर मदनी कामों में मस्रूफ़िय्यत के बाइ़स किसी मदनी इन्आ़म मसलन मद्रसतुल मदीना बालिग़ान में शरीक न हो सके या वालिदैन की वफ़ात या उन के दूसरे शह्र रिहाइश की सूरत में दस्त बोसी और अनपढ़ होने के बाइ़स लिख कर बात करने से मह़रूमी है तो भी तन्ज़ीमी त़ौर पर उन पर अ़मल मान लिया जाएगा ।

तुम मदनी क़ाफ़िलों में ऐ इस्लामी भाइयो !
करते रहो हमेशा सफ़र ख़ुशदिली के साथ
अपनाए जो सदा के लिये मदनी इन्आ़मात
मेरी दुआ़ है ख़ुल्द में जाए नबी के साथ

(वसाइले बख़्शिश)

www.dawateislami.net

अमीरे क़ाफ़िला को कैसा होना चाहिये ?

सुवाल : अमीरे क़ाफ़िला को कैसा होना चाहिये ?

जवाब : अमीरे क़ाफ़िला को निहायत ही सन्जीदा, बा अख़्लाक़, मदनी इन्आ़मात का आ़मिल, ज़बान, आंख और दीगर आ'ज़ा का कुफ़्ले मदीना लगाने वाला, इस्लामी भाइयों का ख़ैर ख़्वाह और अपने मा तह़तों के साथ यक्सां तअ़ल्लुक़ात रखने वाला होना चाहिये । अमीरे क़ाफ़िला ऐसा हो जो ख़ुद तकालीफ़ उठाए लेकिन अपने मा तह़त इस्लामी भाइयों को राह़त पहुंचाए। गाड़ी में सुवार होते वक़्त पहले सब को बा इसरार बिठाए फिर आख़िर में ख़ुद बैठे, अगर जगह न मिले तो खड़ा हो जाए। ऐसा न हो कि पहले सुवार हो कर ख़ुद सीट संभाल ले और अपने मा तह़त इस्लामी भाइयों की परवा ही न करे । मदनी क़ाफ़िले के दौरान अपने मा तह़त इस्लामी भाइयों की ख़ूब ख़ूब ख़िदमत करे और हर त़रह़ से उन को राह़त पहुंचाए। वापसी में तमाम शुरकाए क़ाफ़िला से इन्फ़िरादी त़ौर पर पाउं पकड़ कर (जब कि कोई मानेए शरई न हो तो) मुआ़फ़ी मांगे। इस त़रह़ शुरकाए मदनी क़ाफ़िला पर बहुत अच्छा असर पड़ेगा। (शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :) اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जब मैं मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करता था तो पहले शुरकाए क़ाफ़िला को बस में सुवार करता फ़िर आख़िर में ख़ुद सुवार होता। अगर बस में सीट न मिलती तो इस्लामी भाइयों के क़दमों में नीचे बैठ जाता, अगर सूज़ूकी वग़ैरा में कहीं जाना पड़ता तो इस्लामी भाइयों को बिठाने के बा'द अगर बैठने की

जगह न मिलती तो खड़ा हो जाता। दा'वते इस्लामी के अवाइल में اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे भी शुरकाए मदनी क़ाफ़िला की ख़ूब ख़िदमत करने का मौक़अ़ मिला। शुरूअ़ में हि़फ़ाज़ती उमूर की पाबन्दियां न थीं इस लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र, इज्तिमाई ए'तिकाफ़ के ह़ल्क़ों में शिर्कत और बीमार इस्लामी भाइयों की इ़यादत करना ब आसानी मुम्किन था लेकिन अब ह़ालात के पेशे नज़र येह मुम्किन नहीं रहा। अब सेंकड़ों, हज़ारों इस्लामी भाई मो'तकिफ़ होते हैं हर एक से इन्फ़िरादी त़ौर पर पूछना और एक एक के पास जा कर मिज़ाज पुर्सी करना बहुत मुश्किल है अलबत्ता अब भी मजलिस की त़रफ़ से येह तरकीब है कि जिन बीमार इस्लामी भाइयों के नाम वग़ैरा मिलते हैं उन की त़रफ़ ग़म ख़्वारी के लिये मेरे मक्तूब रवाना किये जाते हैं।

मा तह़्त इस्लामी भाइयों के साथ घुल मिल कर रहें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं इस्लामी भाइयों के साथ इस त़रह़ घुल मिल जाता कि लोग मुझे पहचान भी न पाते थे कि "इल्यास क़ादिरी" कौन है ? कई बार तो ऐसा भी हुवा कि लोग मुझ से ही पूछते थे कि "इल्यास क़ादिरी" कब आ रहा है ? इन वाक़िआ़त को बयान करने का मक़्सद येह है कि अमीरे क़ाफ़िला या निगराने ह़ल्क़ा मुशावरत अपने मा तह़्त इस्लामी भाइयों के साथ घुल मिल कर रहें और अपने शुरका का ख़ूब ख़याल रखें। अगर वोह बीमार हों तो उन की इ़यादत करें, जहां तक मुम्किन हो और कोई मानेए़ शरई न हो तो एक एक से मिज़ाज पुर्सी करें ताकि किसी के दिल में येह बात न आए कि मेरी त़बीअ़त ख़राब है और उन को मा'लूम भी है इस के बा वुजूद मुझे नहीं पूछा। सभी इस्लामी भाइयों और बिल ख़ुसूस अमीरे क़ाफ़िला और निगरान इस्लामी भाइयों को चाहिये कि वोह मिलन

सारी और ग़म ख़्वारी का ज़ेह्न बनाएं और अपने चेहरे पर मुस्कुराहट रखें। बिल्कुल रूई की त़रह़ नर्म और बर्फ़ की त़रह़ ठन्डे हो जाएं اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप के मा तह़्त इस्लामी भाई आप से मुतअस्सिर होंगे और मदनी काम में भी इज़ाफ़ा होगा। अगर आप सख़्त त़बीअ़त और ग़ुस्से वाले होंगे तो आप के सबब दीने इस्लाम के अ़ज़ीम मदनी काम को नुक़्सान पहुंच सकता है।

अल्लाह इस से पहले ईमां पे मौत दे दे
नुक़्सां मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का

(वसाइले बख़्शिश)

अगर कोई अपना ग़ैर मुस्लिम होना ज़ाहिर करे तो क्या करना चाहिये ?

सुवाल : बा'ज़ अवक़ात मदनी क़ाफ़िले में इन्फ़िरादी कोशिश या नेकी की दा'वत देने के बा'द सामने वाला कह देता है कि मैं ग़ैर मुस्लिम हूं। उस वक़्त हमारा मुबल्लिग़ ख़ामोश हो जाता है। उस वक़्त मुबल्लिग़ को क्या करना चाहिये ?

जवाब : ग़ैर मुस्लिम को इस्लाम की दा'वत देना हर एक का काम नहीं लिहाज़ा इन्फ़िरादी कोशिश या नेकी की दा'वत देने के दौरान अगर कोई अपने ग़ैर मुस्लिम (यहूदी, ईसाई और हिन्दू वग़ैरा) होने का इज़्हार करे तो मुबल्लिग़ को चाहिये कि हिम्मत कर के नरमी के साथ इतना कह दे कि हम आप को इस्लाम की दा'वत पेश करते हैं आप इस्लाम क़बूल कर लीजिये। अगर वोह कहे कि मैं मुसल्मान हो जाऊं तो मुझे क्या मिलेगा ? तो कह दीजिये

कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से जन्नत मिलेगी। अब अगर वोह कहे कि मैं मुसल्मान होना चाहता हूं तो फ़ौरन उसे पहले वाले मज़हब से तौबा करवा कर कलिमा पढ़ा दीजिये। किसी आ़लिमे दीन, पीर साहि़ब या इमामे मस्जिद के पास जाने के इन्तिज़ार में हरगिज़ हरगिज़ ताख़ीर मत कीजिये।

हां ! अगर वोह ख़ुद कहे कि मुझे आ़लिमे दीन के पास ले चलो, मैं इस्लाम क़बूल कर लूंगा तो अब चूंकि मुत़ालबा ग़ैर मुस्लिम की त़रफ़ से है लिहाज़ा किसी आ़लिमे दीन के पास ले जाते हुए ताख़ीर की सूरत में ले जाने वाला गुनाहगार न होगा बल्कि सवाब का ह़क़दार होगा। कलिमा पढ़ा लेने के बा'द उस को आज़ाद न छोड़ दें बल्कि उस को ज़रूरिय्याते दीन के बारे में बताएं या फिर किसी सुन्नी आ़लिमे दीन के पास ले कर जाएं जो उस को दीने इस्लाम की बुन्यादी बातें सिखाए। दा'वते इस्लामी के तह़त होने वाला New muslim course भी करवाया जा सकता है। आप ख़ुद उस से राबिते़ में रहें या उस को किसी और के ह़वाले कर दें जो उस से राबित़ा रखे ताकि वोह शैत़ान के बहकावे से बच कर दीने इस्लाम पर साबित क़दम रहे। अगर ऐसा न हो बल्कि वोह ग़ैर मुस्लिम आप से दलाइल मांगे या बह़सो मुबाह़सा करे और अपने कुफ़्रिय्या अ़क़ाइद पर दलाइल पेश करे तो फिर आप उस से बह़सो मुबाह़सा हरगिज़ न कीजिये बल्कि उस शह़र के किसी ऐसे बड़े सुन्नी आ़लिमे दीन की त़रफ़ रहनुमाई कर दें जो उस के मज़हब की मा'लूमात रखता हो, उसे मा'लूम हो कि वोह क्या क्या ए'तिराज़ात कर सकता है और उन ए'तिराज़ात के जवाबात क्या हैं ?

मदनी काम बढ़ाने के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र

सुवाल : अगर अपने अ़लाक़े में मदनी काम न हो तो पहले अपने अ़लाक़े में मदनी काम बढ़ाएं या मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करें ? कहा जाता है कि अगर घर में आग लगी हो तो पहले उसे बुझाना चाहिये ।

जवाब : घर में आग लगी हो तो पहले उसे बुझाना चाहिये येह तो दुरुस्त है मगर आग बुझाने के लिये इस का त़रीक़ा भी आना चाहिये । कहीं ऐसा न हो कि आग बुझाने के लिये उस में कूद पड़ें, आग भी न बुझे और ख़ुद भी जल कर मर जाएं । जिस अ़लाक़े में मदनी काम बिल्कुल न हो या कम हो तो उस अ़लाक़े के इस्लामी भाइयों को ज़ियादा से ज़ियादा मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना चाहिये । मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने से मदनी काम ख़ुद ब ख़ुद बढ़ेगा क्यूं कि उस अ़लाक़े के जो इस्लामी भाई मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बनेंगे तो वोह मदनी क़ाफ़िले से वापस आ कर अपने अ़लाक़े में नेकी की दा'वत की धूमें मचाएंगे और इस्लामी भाइयों को मदनी इन्आ़मात का आ़मिल और मदनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनाने की कोशिश करेंगे जिस से अ़लाक़े में दा'वते इस्लामी का मदनी काम बढ़ेगा ।

मुझ को जज़्बा दे सफ़र करता रहूं परवर्दगार
सुन्नतों की तरबियत के क़ाफ़िले में बार बार

(वसाइले बख़्शिश)

अमीरे अहले सुन्नत की ख़ुद्दारी

सुवाल : सुना है आप मदारिस वग़ैरा का खाना नहीं खाते ?

जवाब : (शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :) اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरा शुरूअ़ से ही येह ज़ेह्न बना हुवा है कि मैं मदारिस का खाना नहीं खाता और न ही मदारिस की कोई चीज़ मसलन टेलीफ़ोन वग़ैरा अपने ज़ाती इस्ति'माल में लाता हूं। इब्तिदाअन जब हमारे मदनी क़ाफ़िले मदारिस से मुल्हक़ा मसाजिद में ठहरते तो उस वक़्त भी मैं मदारिस का खाना खाने से बहुत ज़ियादा कतराता था क्यूं कि उ़मूमन मदारिस ज़कात, सदक़ात और ख़ैरात वग़ैरा पर चलते हैं। हम ने मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर के किसी पर एह़सान तो नहीं किया बल्कि अपनी आख़िरत बेहतर बनाने के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र इख़्तियार किया है। जब घर में हम अपना खाते हैं तो फिर मदनी क़ाफ़िलों में क्यूं न अपने पास से खाएं। उ़र्फ़ में जिन लोगों को मदारिस का खाना खाने की इजाज़त है वोह खा सकते हैं मगर मैं फिर भी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना का खाना नहीं खाता। आप भी अपने अन्दर इख़्लास और क़नाअ़त पैदा कीजिये, जब आप मुख़्लिस और क़ानेअ़ (या'नी क़नाअ़त करने वाले) बनेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दीन का काम भी ज़ियादा अच्छे त़रीक़े से कर सकेंगे और आप की ज़बान में तासीर भी पैदा होगी।

मदनी काम का आग़ाज़ कब और कैसे हुवा ?

सुवाल : दा'वते इस्लामी के मदनी काम का आग़ाज़ कब और कैसे हुवा ?

जवाब : (शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते

अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : (اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जब से मुझे शुऊ़र आया है उस वक़्त से ही नमाज़ें पढ़ने और मसाजिद में जाने का शौक़ था, मैं और दीगर बच्चे मिल कर लोगों को नमाज़ों के लिये घरों से बुलाने जाते थे। मुझे बचपन ही से ना'तें और दुरूदो सलाम पढ़ने का बहुत ज़ियादा शौक़ था। हम अपने मह़ल्ले की बादामी मस्जिद (गोश्त मार्केट खारादर ओल्ड बाबुल मदीना कराची) में नमाज़ पढ़ा करते थे जिस से अज़ान से क़ब्ल दुरूदो सलाम की आवाज़ें आती और दिल को भाती थीं। हर साल बारह रबीउ़ल अव्वल के पुर मसर्रत मौक़अ़ पर धूमधाम के साथ जश्ने विलादत मनाया जाता और मूए मुबारक की ज़ियारत भी करवाई जाती तो मैं बड़े जोशो ख़रोश से उस में शिर्कत किया करता था। इसी त़रह़ हर साल मुबारक अय्याम मसलन मुह़र्रमुल ह़राम में दस दिन, रबीउ़ल आख़िर में ग्यारहवीं शरीफ़ की निस्बत से ग्यारह दिन और रबीउ़ल अव्वल में बारहवीं शरीफ़ की निस्बत से बारह दिन बयानात का सिल्सिला होता। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दस्वीं, ग्यारहवीं, बारहवीं और दीगर मुबारक मवाक़ेअ़ पर होने वाले बयानात की मिठास और नियाज़ की शीरीनी मेरे दिल में उतरती गई। जुमुअ़तुल मुबारक और दीगर मवाक़ेअ़ के इख़्तिताम पर सलातो सलाम पढ़ा जाता तो मैं भी दीगर बच्चों के साथ आगे पहुंच जाता और सलातो सलाम पढ़ने वाले के क़रीब खड़ा हो जाता। मुझे ना'त शरीफ़ पढ़ने का दीवानगी की ह़द तक शौक़ था और ना'त शरीफ़ पढ़ने के लिये मह़ाफ़िले ना'त वग़ैरा में शिर्कत किया करता था। यूं اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे बचपन ही से अच्छी सोह़बत और अच्छा ज़ेह़न नसीब हुवा।

www.dawateislami.net

फिर रफ़्ता रफ़्ता शुऊ़र बढ़ता गया और मुसल्मानों की बिगड़ी हुई ह़ालते ज़ार, गुनाहों की यलग़ार, हर त़रफ़ बे ह़याई की भरमार, मसाजिद की वीरानियां , नमाज़ों और सुन्नतों से दूरियां वग़ैरा कई ऐसे अस्बाब हैं जिन की वज्ह से मेरे दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम और नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़नायत से नेकी की दा'वत देने का जज़्बा बेदार हुवा । शव्वालुल मुकर्रम 1401 हि. मुत़ाबिक़ सितम्बर 1981 ई. में दा'वते इस्लामी के मदनी काम का आग़ाज़ हुवा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआन व सुन्नत की इस आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी को मज़ीद तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और इस मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत, ईमान पर जे़रे गुम्बदे ख़ज़रा जल्वए मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मद्फ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मदनी ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

तेरा शुक्र मौला दिया मदनी माह़ोल
न छूटे कभी भी ख़ुदा ! मदनी माह़ोल
क़ियामत तलक या इलाही ! सलामत
रहे तेरे अ़त्त़ार का मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश)

अमीरे अहले सुन्नत के बचपन का एक ना ख़ुश गवार वाक़िआ़

सुवाल : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से अ़र्ज़ है कि अपने

www.dawateislami.net

बचपन का कोई ऐसा वाक़िआ़ बयान फ़रमा दीजिये जिस से आप के दिल को बहुत सदमा पहुंचा हो ?

जवाब : (शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपना एक दिल ख़राश वाक़िआ़ बयान करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं :) ''एक मर्तबा बारहवीं शरीफ़ के मौक़अ़ पर मूए मुबारक की ज़ियारत करवाई जा रही थी और आख़िर में सलातो सलाम पढ़ा गया तो मैं भी दीगर बच्चों की त़रह़ उस मौक़अ़ पर आगे चला गया । सलातो सलाम के बा'द अज़ाने ज़ोह्र हुई फ़िर जब नमाज़ के लिये सफ़ें बनना शुरूअ़ हुईं तो मैं पहली सफ़ में खड़ा हो गया । इतने में एक बड़े मियां आए, उन्हों ने बड़े ज़ोर से मेरा बाज़ू पकड़ा और डांट कर मुझे वहां से निकाल दिया । मुझे इस का बहुत सदमा हुवा और मेरी सख़्त दिल आज़ारी हुई मगर फिर भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से मैं ने मस्जिद नहीं छोड़ी वरना ऐसे ह़ालात में शैत़ान बहका कर मस्जिद से ऐसा दूर कर देता है कि शायद बन्दा ज़िन्दगी भर मस्जिद का कभी रुख़ न करे ।''

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस वाक़िए़ से येह दर्स मिला कि अगर बच्चे मसाजिद में आएं तो उन को झाड़ कर मसाजिद से निकालना नहीं चाहिये, अगर कोई ग़लत़ी करें तो उन को अह़्सन त़रीक़े से प्यार व मह़ब्बत के साथ समझा दीजिये ताकि वोह आयिन्दा इस से बाज़ रहें। अगर आप उन्हें डांट डपट कर मस्जिद से बाहर निकाल देंगे तो हो सकता है कि उन का दिल टूट जाए और फिर वोह कभी भी मस्जिद की त़रफ़ न आएं ।

छोटे बच्चों को मस्जिद में लाने का हुक्म

सुवाल : क्या छोटे बच्चों को भी मस्जिद में ला सकते हैं ?

जवाब : इतना छोटा बच्चा जिस से नजासत (यानी पेशाब वग़ैरा कर देने) का ख़त़रा हो और पागल को मस्जिद के अन्दर ले जाना ह़राम है अगर नजासत का ख़त़रा न हो तो मक्रूह।[1] ऐसा बच्चा या पागल या बेहोश या जिस पर जिन आया हुवा हो उन को दम करवाने के लिये भी मस्जिद में ले जाने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं। अगर आप छोटे बच्चे वग़ैरा को मस्जिद में लाने की भूल कर चुके हैं तो बराए करम ! फ़ौरन तौबा कर के आयिन्दा न लाने का अ़ह्द कीजिये । हां फ़िनाए मस्जिद मसलन इमाम साह़िब के हुजरे में बच्चे को ले जा सकते हैं जब कि मस्जिद के अन्दर से न गुज़रना पड़े ।

तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती का त़रीक़ा

सुवाल : गुफ़्तगू में बोले जाने वाले ग़लत़ अल्फ़ाज़ के तलफ़्फ़ुज की दुरुस्ती का त़रीक़ा बयान फ़रमा दीजिये ।

जवाब : तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये अपने पास लुग़त रखना मुफ़ीद है । उ़मूमन मार्केट में दस्तयाब शुदा उर्दू लुग़ात वग़ैरा में लग़्विय्यात और कुफ़्रिय्या मुह़ावरात भी होते हैं। काश ! लुग़त की कोई ऐसी किताब हो जिस में कुफ़्रिय्यात व लग़्विय्यात वग़ैरा न हों । इस के इ़लावा तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ होने वाले

مدینہ

1 ..... درمختار، کتاب الصلوۃ، باب مایفسد الصلاۃ ومایکرہ فیھا، ۲/۵۱۸ دار المعرفۃ بیروت

www.dawateislami.net

मदनी रसाइल नीज़ अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुब का बग़ौर मुत़ालआ़ भी बेह़द मुफ़ीद है क्यूं कि इन कुतुबो रसाइल में तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती का ख़याल रखते हुए ह़त्तल इम्कान मुश्किल और ग़ैर मश्हूर अल्फ़ाज़ पर ए'राब लगाने की कोशिश की गई है। बा'ज़ इस्लामी भाई फ़ैज़ाने सुन्नत या रसाइल से दर्सो बयान करते हुए अल्फ़ाज़ पर ए'राब होने के बा वुजूद ग़लत़ पढ़ रहे होते हैं क्यूं कि बरसों से ज़ेह्न में बैठे हुए ग़लत़ ए'राब पर मुश्तमिल अल्फ़ाज़ अदा करने की आ़दत बन चुकी होती है लिहाज़ा दर्सो बयान की तय्यारी के वक़्त मुत़ालआ़ करते हुए अल्फ़ाज़ पर लगाए गए ए'राब के मुत़ाबिक़ ही पढ़ते हुए तलफ़्फ़ुज़ दुरुस्त करने की कोशिश कीजिये।

बीसियों अल्फ़ाज़ ऐसे हैं जिन पर ह़रकत की तब्दीली से मा'ना में तब्दीली वाक़ेअ़ हो सकती है। सिर्फ़ उर्दू में बोले जाने वाले चन्द अल्फ़ाज़ मुलाह़ज़ा कीजिये जिन के तलफ़्फ़ुज़ में उ़मूमन लोग ग़लती करते हैं मसलन हमारे हां आ़म त़ौर पर बोला जाता है "फ़ुलां बाहिर खड़ा है।" हालां कि बाहिर का मा'ना रोशन होता है अस्ल तलफ़्फ़ुज़ "बाहर" है। इसी त़रह़ "तबारक व तआ़ला" को "तबारिक व तआ़ला", ईद मुबारक को ईद मुबारिक, मुर्शिद को मुर्शद, सय्यिद को सय्यद, मदनी को मद्नी, मय्यित को मय्यत, क़ियामत को क़यामत, दुरुस्त को दरुस्त, ग़लत़ को ग़ल्त़, हुक्म को हुकम, सब्र को सबर, इ़ल्म को इ़लम और शुक्र को शुकर पढ़ते हैं। इसी त़रह़ नामों में आ़बिद को आ़बद, वाह़िद को वाह़द और वाजिद को वाजद कहते हैं।

पीरो मुर्शिद की मह़ब्बत ह़ासिल करने का त़रीक़ा

सुवाल : मुरीद की बक़ा और इस्तिक़ामत मह़ब्बते मुर्शिद में है तो येह

www.dawateislami.net

इर्शाद फ़रमाइये कि महब्बते मुर्शिद कैसे हासिल की जाए ?

जवाब : अपने जामेए शराइत पीरो मुर्शिद की महब्बत हासिल करने के लिये सब से पहले अपने पीरो मुर्शिद के औसाफ़ो कमालात जानने की कोशिश की जाए कि इस से दिल में पीरो मुर्शिद की महब्बत बढ़ेगी। अपने आप को पीरो मुर्शिद की बद गुमानी से हर दम बचाने की कोशिश करे क्यूं कि पीर पर बद गुमानी हलाकत का सबब है। अगर पीरो मुर्शिद कोई काम ख़िलाफ़े सुन्नत भी कर रहे हों तभ भी बद गुमानी दिल में न लाए अव्वलन येह कि हो सकता है कि जिस अमल को वोह सुन्नत समझ रहा हो वोह सुन्नत भी है या नहीं अगर हो तो येह भी हो सकता है कि पीरो मुर्शिद की तवज्जोह न हो या येह भी मुम्किन है कि पीर साहिब किसी उज़्रे शरई की वज्ह से सुन्नत छोड़ रहे हों मसलन अगर पीर साहिब उल्टे हाथ से पानी पी रहे हों तो उन से बद गुमान न हो क्यूं कि हो सकता है कि पीर साहिब के सीधे हाथ में इस क़दर शदीद ज़ख़्म हो जिस की वज्ह से पानी का गिलास उठाना मुम्किन न हो। इसी तरह अगर वोह खड़े खड़े पानी पी रहे हों तो भी बद गुमानी न कीजिये हो सकता है कि वोह वुज़ू का बचा हुवा पानी या आबे ज़मज़म पी रहे हों कि येह दो पानी खड़े हो कर पी सकते हैं जैसा कि सदरुश्शरीअह, बदरुत्तरीक़ह, मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : लोग मुत्लक़न खड़े हो कर पानी पीने को मक्रूह बताते हैं हालां कि वुज़ू के पानी का येह हुक्म नहीं बल्कि इस को खड़े हो कर पीना मुस्तहब है।

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ आबे ज़मज़म को भी खड़े हो कर पीना सुन्नत है। येह दोनों पानी इस हुक्म से मुस्तस्ना (या'नी अलग) हैं और इस में ह़िक्मत येह है कि खड़े हो कर जब पानी पिया जाता है वोह फ़ौरन तमाम आ'ज़ा की त़रफ़ सरायत कर जाता है (या'नी तमाम आ'ज़ा में पहुंच जाता है) और येह मुज़िर (नुक़्सान देह) है, मगर येह दोनों बरकत वाले हैं और इन से मक़्सूद ही तबर्रुक है लिहाज़ा इन का तमाम आ'ज़ा में पहुंच जाना फ़ाएदे मन्द है।[1] **मुरीद** को चाहिये कि अपने दिल में पीर की मह़ब्बत इस क़दर बढ़ाए कि मुरीदे कामिल हो जाए। अगर बिलफ़र्ज़ पीर साह़िब बिग़ैर किसी वज्ह के झाड़ कर निकाल भी दें तो उस की अ़क़ीदतो मह़ब्बत में कमी न आए। अपने पीर साह़िब की सोह़बत में ज़ियादा से ज़ियादा वक़्त गुज़ारे और उन की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी करते हुए वोह जो इर्शाद फ़रमाएं उस पर अ़मल पैरा हो। पीर अपने मुरीद को शरीअ़त का पाबन्द देखना चाहता है लिहाज़ा मुरीद को चाहिये कि वोह रिज़ाए इलाही के लिये नमाज़ों की पाबन्दी, जमाअ़त का एहतिमाम, सुन्नत के मुत़ाबिक़ चेहरे पर दाढ़ी, सर पर इ़मामा और सुन्नत के मुत़ाबिक़ लिबास ज़ेबे तन करे। इसी त़रह़ अगर पीर साह़िब मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने से ख़ुश होते हों तो मुरीद को चाहिये कि वोह रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए मदनी इन्आ़मात के रिसाले को पुर करे और हर मदनी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल भी बना ले और सुन्नतों की तरबियत के लिये ज़िन्दगी में यक मुश्त 12 माह, हर 12 माह में एक माह और उ़म्र भर हर माह 3 दिन के लिये आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करे। मुरीद

مدینہ

1 .....बहारे शरीअ़त, 3/384, ह़िस्सा : 16, मक्तबतुल मदीना, बाबुल मदीना कराची

www.dawateislami.net

का ज़ाहिरो बातिन एक होना चाहिये, ऐसा न हो कि पीर साहिब के सामने तो गिड़गिड़ाए, दीवानगी दिखाए और ग़ैर मौजूदगी में इस का ख़िलाफ़ करे। अल ग़रज़ अगर मुरीद अपने पीर की महब्बत में सच्चा होगा तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़रूर अपने पीरो मुर्शिद के फ़ुयूज़ो बरकात से मालामाल होगा।

''इन्फ़िरादी कोशिश'' का मत़लब व अहम्मिय्यत

सुवाल : ''इन्फ़िरादी कोशिश'' किसे कहते हैं ?

जवाब : एक या चन्द (मसलन दो या तीन) इस्लामी भाइयों को अलग से समझाते हुए उन्हें नेकी की दा'वत देना ''इन्फ़िरादी कोशिश'' कहलाता है जब कि कसीर इस्लामी भाइयों के सामने दर्सो बयान करते हुए उन्हें नेकी की दा'वत देना ''इज्तिमाई कोशिश'' कहलाता है। ''इन्फ़िरादी कोशिश'' तब्लीग़े दीन और नेकी की दा'वत की जान है और येह हर वक़्त, उठते बैठते, चलते फिरते, सफ़रो ह़ज़र अल ग़रज़ हर जगह हो सकती है और येह ''इज्तिमाई कोशिश'' से कहीं ज़ियादा मुअस्सिर भी होती है। बारहा देखा गया है कि बरसहा बरस से इस्लामी भाई इज्तिमाअ़ वग़ैरा में शरीक होते और मदनी क़ाफ़िलों की तरग़ीबात सुनते रहते हैं लेकिन इस के बा वुजूद मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र नहीं कर पाते मगर जब उन पर कोई ''इन्फ़िरादी कोशिश'' करते हुए उन्हें मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की दा'वत देता है तो वोह मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने में काम्याब हो जाते हैं। ''इज्तिमाई कोशिश'' के मुक़ाबले में ''इन्फ़िरादी कोशिश''

करना बेहद आसान भी है क्यूं कि कसीर इस्लामी भाइयों के सामने बयान करना हर एक के बस की बात नहीं जब कि ''इन्फ़िरादी कोशिश'' बच्चा, बूढ़ा, जवान वग़ैरा सभी कर सकते हैं ख़्वाह उन्हें बयान करना आता हो या न आता हो।

''इन्फ़िरादी कोशिश'' करने का त़रीक़ा

सुवाल : ''इन्फ़िरादी कोशिश'' करने का त़रीक़ा भी इर्शाद फ़रमा दीजिये।

जवाब : ''इन्फ़िरादी कोशिश'' करने वाले के लिये मिलन सार और ग़म ख़्वार होना बहुत ज़रूरी है क्यूं कि मिलन सारी और ग़म ख़्वारी ''इन्फ़िरादी कोशिश'' की जान है। अगर मिलन सारी नहीं होगी तो फिर ''इन्फ़िरादी कोशिश'' करने में कमा ह़क़्क़ुहू काम्याबी ह़ासिल नहीं हो सकती। यूं समझिये कि ''इन्फ़िरादी कोशिश'' करना शरबत तय्यार करने की त़रह़ है। इस में शह्द जैसी मिठास होनी चाहिये, मुस्कुराहट के पिस्ते और बादाम भी डालने होंगे, अगर कोई मानेए शरई न हो तो सामने वाले को गले लगा कर थपकी भी देनी होगी। अल ग़रज़ ह़िक्मते अ़मली के साथ ऐसी ''इन्फ़िरादी कोशिश'' की जाए कि सामने वाला मुतअस्सिर हो कर दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाए।

इसी त़रह़ ''इन्फ़िरादी कोशिश'' करने वाले को मौक़अ़ महल की मुनासबत से मिलन सार होने के साथ साथ ग़म ख़्वार भी होना चाहिये। ''इन्फ़िरादी कोशिश'' के दौरान अगर बिलफ़र्ज़

www.dawateislami.net

किसी को उदास देखें या उस से परेशानी की ख़बर सुनें तो फ़ौरन आप के चेहरे पर उदासी और ग़म के आसार नमूदार हो जाने चाहिएं, मसलन सामने वाला कहता है कि मेरी मां बीमार है, डॉक्टरों ने केन्सर की निशान देही की है तो आप को चाहिये कि उसे दिलासा दें, अपने मुंह से ऐसे अल्फ़ाज़ अदा करें जो उस के लिये तस्कीन और हौसला अफ़्ज़ाई का सामान करें और उस की वालिदा की सिह्ह़त याबी के लिये दुआ कीजिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप की वालिदा को शिफ़ा अ़ता फ़रमाए और आप की हर परेशानी दूर फ़रमाए। फिर उस को मदनी मश्वरा दीजिये कि आप अपनी अम्मीजान की सिह्ह़त याबी के लिये राहे ख़ुदा में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कर के दुआ़ मांगिये कि मुसाफ़िर की दुआ क़बूल होती है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : तीन क़िस्म की दुआ़एं मुस्तजाब (या'नी मक़्बूल) हैं, इन की क़बूलिय्यत में कोई शक नहीं : (1) मज़्लूम की दुआ़ (2) मुसाफ़िर की दुआ़ (3) बाप की अपने बेटे के लिये दुआ़।[1]

मां जो बीमार हो या वोह नाचार हो
रन्जो ग़म मत करें क़ाफ़िले में चलो
रब के दर पर झुकें इल्तिजाएं करें
बाबे रह़मत खुलें क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश)

مدینہ

1 ..... ترمذی، کتاب الدعوات، باب ماذکر فی دعوۃ المسافر، ۵/۲۸۰، حدیث: ۳۴۵۹ دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

''इन्फ़िरादी कोशिश'' करना सुन्नत है

सुवाल : क्या ''इन्फ़िरादी कोशिश'' करना हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है ?

जवाब : जी हां ! तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ख़ुद हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ''इन्फ़िरादी कोशिश'' फ़रमाई । ह़ज के मौक़अ़ पर हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब नफ़्से नफ़ीस मिना शरीफ़ के ख़ैमों में तशरीफ़ ले जा कर नेकी की दा'वत इर्शाद फ़रमाते । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ''इन्फ़िरादी कोशिश'' से कई सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ईमान की दौलत से मुशर्रफ़ हुए मसलन ''मर्दों में सब से पहले अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ईमान लाए, औ़रतों में उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ईमान लाईं, बच्चों में सब से पहले अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ईमान लाए ।[1]

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه भी अपनी बहन, बहनोई और सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ''इन्फ़िरादी कोशिश'' से मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए । आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه एक दिन गुस्से में भरे हुए नंगी तलवार ले कर इस इरादे से चले कि आज में इसी तलवार से पैग़म्बरे इस्लाम को शहीद कर दूंगा । इत्तिफ़ाक़ से रास्ते में

مدینہ

1 ..... تاریخ الخلفاء، ص۲۶ ملخصاً باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना नुऐ़म बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मुलाक़ात हो गई। येह मुसल्मान हो चुके थे मगर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन के इस्लाम की ख़बर नहीं थी। उन्हों ने पूछा : ऐ उ़मर ! इस दो पहर की गरमी में नंगी तलवार ले कर कहां चले ? कहने लगे आज बानिये इस्लाम को शहीद करने के लिये घर से निकल पड़ा हूं। उन्हों ने कहा : पहले अपने घर की ख़बर लो। तुम्हारी बहन "फ़ातिमा" और तुम्हारे बहनोई "सईद बिन ज़ैद" भी तो मुसल्मान हो गए हैं। येह सुन कर आप बहन के घर पहुंचे और दरवाज़ा खटखटाया। घर के अन्दर चन्द मुसल्मान छुप कर क़ुरआन पढ़ रहे थे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की आवाज़ सुन कर सब लोग डर गए और क़ुरआन के अवराक़ छोड़ कर इधर उधर छुप गए। बहन ने उठ कर दरवाज़ा खोला तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ चिल्ला कर बोले : ऐ अपनी जान की दुश्मन ! क्या तू भी मुसल्मान हो गई है ? फिर अपने बहनोई ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर झपटे और उन की दाढ़ी पकड़ कर उन को ज़मीन पर पटख़ दिया और सीने पर सुवार हो कर मारने लगे। उन की बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا अपने शोहर को बचाने के लिये दौड़ पड़ीं तो ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन को ऐसा त़मांचा मारा कि उन का चेहरा ख़ून से लहू लुहान हो गया। बहन ने साफ़ साफ़ कह दिया : ऐ उ़मर ! सुन लो, तुम से जो हो सके कर लो मगर अब इस्लाम दिल से नहीं निकल सकता। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बहन का ख़ून आलूद चेहरा देखा और उन का अ़ज़्मो इस्तिक़ामत से भरा हुवा येह जुम्ला सुना तो उन पर रिक़्क़त त़ारी हो गई और एक दम दिल नर्म पड़ गया। थोड़ी देर तक ख़ामोश खड़े रहे।

www.dawateislami.net

फिर कहा : अच्छा तुम लोग जो पढ़ रहे थे मुझे भी दिखाओ। बहन ने क़ुरआन के अवराक़ सामने रख दिये। उन की नज़र जब इस आयत पर पड़ी (پ۲۷،الحدید:۱) ﴿ سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ۝ ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "**अल्लाह** की पाकी बोलता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है और वोही इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाला है।" इस आयत का एक एक लफ़्ज़ सदाक़त की तासीर का तीर बन कर दिल की गहराई में पैवस्त होता चला गया और जिस्म का एक एक बाल लरज़ा बर अन्दाम होने लगा। जब इस आयत पर पहुंचे : (پ۲۷،الحدید:۷) ﴿ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "**अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाओ।" तो बिल्कुल ही बेक़ाबू हो गए और बे इख़्तियार पुकार उठे : "اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه" उस वक़्त हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना अरक़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मकान में तशरीफ़ फ़रमा थे हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه बहन के घर से निकले और सीधे हज़रते सय्यिदुना अरक़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के मकान पर पहुंचे तो दरवाज़ा बन्द पाया, कुन्डी बजाई, अन्दर के लोगों ने दरवाज़े की झिरी से झांक कर देखा तो हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه नंगी तलवार लिये खड़े थे। लोग घबरा गए और किसी में दरवाज़ा खोलने की हिम्मत न हुई मगर हज़रते सय्यिदुना हम्ज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : दरवाज़ा खोल दो और अन्दर आने दो अगर नेक निय्यती से आया है तो उस का ख़ैर मक़्दम किया जाएगा वरना उसी की तलवार से उस की गरदन उड़ा दी जाएगी। हज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अन्दर क़दम रखा

www.dawateislami.net

तो हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद आगे बढ़ कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه का बाज़ू पकड़ा और फ़रमाया : ऐ ख़त्ताब के बेटे ! तू मुसल्मान हो जा। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ब आवाज़े बुलन्द कहा : صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ''اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَاَنَّكَ رَسُوْلُ الله'' हुज़ूरे अक़्दस ने ख़ुशी से ना'रए तक्बीर बुलन्द फ़रमाया और तमाम ह़ाज़िरीन ने इस ज़ोर से अल्लाहु अक्बर का ना'रा मारा कि मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا की पहाड़ियां गूंज उठीं।[1]

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस प्यारी प्यारी सुन्नत को अदा कते हुए हमारे सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان व बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن ने भी ''इन्फ़िरादी कोशिश'' को जारी रखा और दीने इस्लाम के पैग़ाम को दुन्या भर में आ़म किया। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने ईमान लाते ही इस्लाम की दा'वत पेश करना शुरूअ़ कर दी। आप की ''इन्फ़िरादी कोशिश'' से वोह पांच सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी ईमान से मुशर्रफ़ हुए जो अ़शरए मुबश्शरा में दाख़िल हैं। जिन के अस्माए गिरामी येह हैं : (1) ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه (2) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه (3) ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه (4) ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه (5) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه।[2]

---

1 ..... شرح الزرقانی، اسلام الفاروق، ۲/۵تا۸ ملخصاً دار الکتب العلمیۃ بیروت

2 ..... البدایۃ والنہایۃ، فصل فی ذکر أول من أسلم...الخ، ۲/۳۶۸ ملخصاً دار الفکر بیروت

www.dawateislami.net

एह़सासे कम्तरी और झिझक का इलाज

सुवाल : इन्फ़िरादी कोशिश के दौरान एह़सासे कम्तरी और झिझक हो तो क्या करना चाहिये ?

जवाब : इन्फ़िरादी कोशिश के दौरान नज़र अस्बाब पर रखने के बजाए ख़ालिक़े अस्बाब (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) पर रखिये । अपनी कम मायगी और ना अह्ली को पेशे नज़र रखते हुए दिल ही दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ कीजिये कि "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरा रंग है न रूप और न ही बात करने का कोई ढंग है, बस तू ही दिलों को फेरने वाला है, इन लोगों के दिल भी अपनी इत़ाअ़त की त़रफ़ फेर दे ।" कई ऐसे इस्लामी भाई होते हैं जिन में वाक़ेई बात करने की इतनी सलाह़िय्यत नहीं होती लेकिन बड़ों बड़ों को दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में ले आते हैं जब कि कई इस्लामी भाई ऐसे भी होते हैं जिन को अच्छा बोलना आता है लेकिन इस के बा वुजूद वोह किसी को मदनी माह़ोल में नहीं ला पाते । इस लिये जब भी किसी को नेकी की दा'वत दें तो अपने अच्छा बोलने के फ़न पर नाज़ करने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मदद और उस के प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के करम पर नज़र रखिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की झिझक और एह़सासे कम्तरी ख़त्म हो जाएगी ।

मायूस क्यूं हो आ़सियो ! तुम ह़ौसला रखो
रब की अ़त़ा से उन का करम है सभी के साथ

(वसाइले बख़्शिश)

"मदनी माहोल" से वाबस्ता होने और छोड़ने की वुजूहात

सुवाल : इस्लामी भाइयों के दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता होने और फिर मदनी माहोल छोड़ देने की क्या वुजूहात हैं ?

जवाब : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल की बरकतें ज़ाहिर हैं । इन बरकतों को हासिल करने, अच्छी सोहबत अपनाने, बुरी सोहबत से पीछा छुड़ाने, नमाज़ों की आदत बनाने, सुन्नतें अपनाने, नेकियों की ख़स्लत पाने, गुनाहों की नहूसत से ख़ुद को बचाने, नेकी की दा'वत की धूमें मचाने और अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर बनाने के लिये इस्लामी भाई मदनी माहोल से वाबस्ता होते हैं। शैतान जब देखता है कि इन्हें मदनी माहोल की ख़ूब बरकतें नसीब हो रही हैं, इन की दुन्या व आख़िरत संवर रही है तो वोह उन को मदनी माहोल से दूर करने की कोशिश में लग जाता है बिल आख़िर नफ़्सो शैतान के बहकावे में आ कर बा'ज़ इस्लामी भाई मदनी माहोल से दूर हो जाते हैं ।

(**शैख़े तरीक़त,** अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :) इस्लामी भाइयों के मदनी माहोल से दूर होने की एक बड़ी वज्ह कुछ नादान इस्लामी भाइयों की ग़ैर इरादी कोताहियां हैं कि इस्लामी भाई एक दूसरे के दुख दर्द और ग़मी ख़ुशी के मवाक़ेअ़ में शरीक नहीं होते । अगर आप किसी के हां शादी वग़ैरा ख़ुशी

www.dawateislami.net

के मौक़अ़ पर न जाएं तो इतना महसूस नहीं होता मगर ग़मी के मौक़अ़ पर न जाएं तो बहुत महसूस किया जाता है। इस त़रह़ के कई वाक़िआ़त हैं कि वोह इस्लामी भाई जो बरसों से मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे उन के किसी अ़ज़ीज़ के वफ़ात पाने पर ज़िम्मेदार इस्लामी भाइयों की शिर्कत न करने की वज्ह से वोह मदनी माह़ोल से दूर हो गए। पंजाब के एक शह़र से मुझे मक्तूब मौसूल हुवा जिस में मक्तूब भेजने वाले इस्लामी भाई ने लिखा था कि मेरे वालिद साह़िब का इन्तिक़ाल हुवा तो मैं ने अ़लाक़े के ज़िम्मेदार को इत्तिलाअ़ भी दी मगर फिर भी ज़िम्मेदार तो क्या किसी एक इस्लामी भाई ने भी शिर्कत नहीं की। मेरा दिल आप लोगों की त़रफ़ से बिल्कुल टूट चुका है, अब मेरा आप लोगों से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि एक इस्लामी भाई के वालिद साह़िब के फ़ौत होने पर इस्लामी भाइयों के शिर्कत न करने के सबब उस का दिल टूट गया और वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से दूर हो गया। हर इस्लामी भाई को एक दूसरे के दुख दर्द और ग़मी ख़ुशी में शरीक होना चाहिये। अगर कोई इस्लामी भाई बीमार पड़ जाए तो उस की इ़यादत कीजिये, उस का कोई अ़ज़ीज़ फ़ौत हो जाए और कोई शरई मजबूरी न हो तो ज़रूर शिर्कत कीजिये। ग़मी के मवाक़ेअ़ पर मज़्हबी लोगों की ज़ियादा ज़रूरत होती है उ़मूमन इस पर तवज्जोह नहीं दी जाती। नमाज़े जनाज़ा के इ़लावा तदफ़ीन, तल्क़ीन वग़ैरा के मवाक़ेअ़ पर भी मज़्हबी लोगों की ज़रूरत पड़ती है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के क़ियाम से क़ब्ल और इस के अवाइल में भी जब किसी के हां इन्तिक़ाल होता और मुझे पता चलता तो मैं ग़ुस्ल, तक्फ़ीन और तदफ़ीन वग़ैरा में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेता था। आप भी अपनी आख़िरत बेहतर बनाने, नेकियां कमाने और दा'वते इस्लामी का मदनी काम दुन्या भर में फैलाने के जज़्बे के तह्त जहां भी आशिक़ाने रसूल में से किसी के इन्तिक़ाल की इत्तिलाअ़ मिले अगर्चे वोह दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से वाबस्ता न हो तब भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लीजिये। आप ख़ुद देखेंगे कि मय्यित के अहले ख़ाना दा'वते इस्लामी से मुतअस्सिर हो कर اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मदनी माहोल से वाबस्ता हो जाएंगे और यूं दा'वते इस्लामी के मदनी कामों को मदीने के बारह चांद लग जाऐंगे।

मक़्बूल जहां भर में हो "दा'वते इस्लामी"
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार ! मदीने का

(वसाइले बख़्शिश)

इबादत के नव हिस्से ख़ामोशी में हैं

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इबादत के 10 हिस्से हैं नव हिस्से ख़ामोशी में और दस्वां हिस्सा हलाल कमाने में है। (فردوس الاخبار، باب العین، ۲/ ۸۶، حدیث: ۴۰۶۲ دار الفکر بیروت)

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मा तह़्त इस्लामी भाइयों के साथ घुल मिल कर रहें	19
दिल जीतने का नुस्ख़ा	1		
सलाम में पहल करना चाहिये	3	अगर कोई अपना ग़ैर मुस्लिम होना ज़ाहिर करे तो क्या करना चाहिये ?	20
अंगूठा दबाने से मह़ब्बत पैदा होती है	4		
दौराने मुलाक़ात नेकी की दा'वत	4	मदनी काम बढ़ाने के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र	22
ख़ुशी की ख़बर पर मुबारक बाद	6		
ग़मी की ख़बर पर ता'ज़ियत	6	अमीरे अहले सुन्नत की ख़ुद्दारी	23
दूसरों की नफ़्सियात को पेशे नज़र रखना	7	मदनी काम का आग़ाज़ कब और कैसे हुवा ?	23
मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स करने में निय्यत	8		
''मदनी इन्आ़मात व मदनी क़ाफ़िला कोर्स'' करने की अहम्मिय्यत	9	अमीरे अहले सुन्नत के बचपन का एक ना ख़ुश गवार वाक़िआ़	25
		छोटे बच्चों को मस्जिद में लाने का हुक्म	27
दर्से निज़ामी अहम है या मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना ?	10	तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्ती का त़रीक़ा	27
		पीरो मुर्शिद की मह़ब्बत ह़ासिल करने का त़रीक़ा	28
ज़बान में तासीर कैसे पैदा हो ?	11		
मदनी क़ाफ़िले में सफ़र किस निय्यत से किया जाए ?	13	''इन्फ़िरादी कोशिश'' का मत़लब व अहम्मिय्यत	31
लोग ज़बान न समझते हों तो मदनी काम कैसे करें ?	15	''इन्फ़िरादी कोशिश'' करने का त़रीक़ा	32
		''इन्फ़िरादी कोशिश'' करना सुन्नत है	34
बिग़ैर किये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल का एक क़ाइ़दा	17	एह़सासे कम्तरी और झिझक का इ़लाज	38
		''मदनी माह़ोल''से वाबस्ता होने और छोड़ने की वुजूहात	39
अमीरे क़ाफ़िला को कैसा होना चाहिये ?	18		

www.dawateislami.net

الله

صلّوا علی الحبیب ! صلی اللہ تعالیٰ علی محمد

"اگر سدھرنا چاہتے ہو تو "مدنی انعامات"

مضبوطی سے تھام لو۔"

المدینۃ

البقیع

۱۷ محرم الحرام ۱۴۳۷ھ

الله

صلّوا علی الحبیب

صلی اللہ تعالیٰ علی محمد

"وہ بندہ نہایت خوش نصیب ہے

جسے جونہی موقع ملتا ہے جھٹ سے درود شریف

پڑھنے لگتا ہے۔"

صلّوا علی الحبیب !

صلی اللہ تعالیٰ علی محمد

المدینۃ

البقیع

۱۷ محرم الحرام ۱۴۳۷ھ

المسوت

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَ اللّٰه " अपनी इस्लाह़ के लिये **"मदनी इन्आ़मात"** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **"मदनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه

01012941

मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

अहमदआबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिर्ज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली - 6, फ़ोन : 011-23284560

मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 60 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

हैदरआबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदरआबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 24572786

E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com, Web : www.dawateislami.net